Module -1

स्कूल प्रमुखों के लिए 21वीं सदी के कौशल

● प्रियंका कुमारी ● राजेश कुमार भारती

एक अच्छी शैक्षणिक संस्था वह है जिसमें प्रत्येक छात्र का स्वागत किया जाता है और उसकी देखभाल की जाती है, जहाँ एक सुरक्षित और प्रेरणादायक शिक्षण वातावरण उपलब्ध होता है, जहाँ सभी छात्रों को सीखने के लिए विविध प्रकार के अनुभव उपलब्ध कराए जाते हैं और जहाँ सीखने के लिए अच्छे आधारभूत ढांचे एवं उपयुक्त संसाधन उपलब्ध रहते हैं। ये सब प्राप्त करना प्रत्येक शिक्षा संस्थान का लक्ष्य होना चाहिए। साथ ही विभिन्न संस्थानों के बीच तथा शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर परस्पर सहज 'जुड़ाव और समन्वय' आवश्यक है।

"A good education institution is one in which every student feels welcomed and cared for, where a safe and stimulating learning environment exists, where a wide range of learning experiences are offered, and where good physical infrastructure and appropriate resources conducive to learning are available to all students. Attaining these qualities must be the goal of every educational institution., However, at the same time, there must also be seamless integration and coordination across institutions and across all stages of education".

स्कूल प्रमुखों के लिए 21वीं सदी के कौशल

1. प्रस्तावना	1-2
2. उद्देश्य	4
3. स्कूल प्रमुखों के लिए प्रमुख कौशल	5-8
(i) कौशल की परिभाषा	
(ii) 21वीं सदी के कौशल की आवश्यकता	
(iii) प्रमुख कौशल व उनकी व्याख्या	
4. केस अध्ययन	9-10
5. गतिविधि	11
(i) रोल प्ले	
(ii) अवलोकन/परिभ्रमण	
6. प्रश्नोत्तरी	12
7. सारांश	14

***

प्रस्तावना

नित-नूतन वैज्ञानिक अनुसंधानों-शोधों और प्रौद्योगिकी में आए नवीनतम बदलावों ने हमारे विकास के मार्ग को जितना प्रशस्त किया, उतना ही उस मार्ग पर चलने के लिए हमें उद्वेलित और अनुप्राणित भी किया। हम सभी इस तथ्य से भलीभांति अवगत हैं कि बच्चों की प्रगति की फर्श से अर्श तक की यात्रा स्कूल की उन सीढ़ियों से होकर गुजरती है जिनपर धीमे-धीमे, सुगढ़ और संयमित तरीके से अपने पांव रखकर वे विभिन्न तरह के कौशलों में पारंगतता स्तर की दक्षता प्राप्त करते हैं, अपने जीवन को एक नया आयाम देते हैं।

इस लिहाज से स्कूल प्रमुखों के लिए 21 वीं सदी के कौशल की अपनी अनिवार्यताएँ और उपयोगिताएँ हैं। पिछले दशक के अंत से लेकर वर्तमान दशक के आरंभिक वर्षों में कोविड महामारी ने जीवन जीने के रास्ते में इतने कठिन हालात पैदा किए कि शैक्षिक प्रगति-रथ के पहिए में अचानक एक ब्रेक-सा लग गया और इसकी गतिशीलता अवरुद्ध हो गयी। ऐसे में स्कूलों के सामने जो अभूतपूर्व समस्याएँ आई उनके निदान हेतु स्कूल प्रमुखों के लिए 21 वीं सदी के कौशल विकास की नयी विचारधारा ने नये सिरे से आकार ग्रहण करना शुरू किया।

विद्यालयों के सशक्तीकरण, हुनरमंद और प्रतिभाशाली व्यक्तित्वों के शोधन, बदलते वैश्विक परिवेश के अनुरूप खुद को ढालने की कला में पारंगतता की प्राप्ति और मानव संसाधन को समाजोपयोगी और उन्नतशील बनाने के लिए स्कूल प्रमुखों को जिस रचनात्मक व तार्किक दृष्टि की आवश्यकता है, विद्यालय प्रबंधन को जिन तकनीकों-उपकरणों और अंतर्जाल के प्रयोग करने हैं तथा बच्चों को जीवन-सफर में जिस धूप-छाँव से सामंजस्य बिठाने हैं, उन सभी ताले की एक ही चाबी है-21वीं सदी के कौशलों की पहचान, परख व उसमें स्कूल प्रमुखों की दक्षता। सीधे शब्दों में कहें तो बदलते शैक्षिक परिदृश्य की आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति तथा बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु विद्यालय प्रमुखों का 21वीं सदी के कौशलों से परिपूर्ण होना अनिवार्य हो गया है।

इन कौशलों में दक्ष होकर स्कूल प्रमुख निस्संदेह अपने विद्यालय को नवाचारों के एक बेहतर केंद्र-स्थल के रूप में परिणत कर पाएंगे, प्रतिस्पर्धात्मक रूप से अपने बच्चों को ज्यादा मूल्यवान नागरिक बना सकेंगे और भारत को विश्वगुरु बनता हुआ देखने का सपना साकार कर पाएंगे।

***

उद्देश्य:-

- बदलते शैक्षिक परिदृश्य में निहित विभिन्न आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति हेतु।
- विद्यालय के कुशल प्रबंधन एवं संचालन हेतु।
- स्वस्थ एवं तनावमुक्त कार्य वातावरण उपलब्ध करवाने हेतु।
- शिक्षा में अभिभावकों एवं समुदाय की सहभागिता सुनिश्चित करवाने हेतु।
- शिक्षा में प्रौद्योगिकी के समुचित प्रयोग हेतु।
- सृजनात्मकता एवं रचनात्मकता तथा सांस्कृतिक विकास हेतु।
- सहयोगात्मक रुप से समस्या समाधान हेतु।
- शिक्षा में विश्लेषणात्मक सोच को बढ़ावा देने के लिए।
- प्रभावी संचारण एवं टीम प्रबंधन हेतु।
- शिक्षा में समावेशन हेतु।

स्कूल प्रमुखों के लिए 21वीं सदी का प्रमुख कौशल

बदलते शैक्षिक परिदृश्य में वर्तमान समय की आवश्यकताओं के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लक्ष्य प्राप्ति हेतु विद्यालय प्रमुखों को विभिन्न कौशलों से युक्त होना एक अनिवार्य शर्त हो गई है। विभिन्न कौशलों से परिपूर्ण एक सशक्त नेतृत्वकर्ता ही विद्यालयी दायित्वों एवं लक्ष्यों की प्रतिपूर्ति बेहतरीन तरीके से कर सकता है।

21वीं सदी के कौशलों पर बात करने से पूर्व हम यह समझने का प्रयास करते हैं कि -

कौशल से क्या तात्पर्य है?

इसक तात्पर्य किसी भी कार्य के निष्पादन या प्रदर्शन में अपने / सीखे हुए ज्ञान का सरल,सहज तथा प्रभावी ढंग से उपयोग करने की क्षमता से है। सामान्य शब्दों में कहें तो कौशल का संबंध दक्षता और तकनीक ज्ञान से है।

कौशल को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है -

- ✓ कार्यात्मक,
- ✓ स्व-प्रबंधन,
- ✓ विशेष ज्ञान।

कौशल की आवश्यकता

जिस प्रकार से प्रत्येक बच्चा अपने आप में अद्वितीय होता है और उसकी सीखने का स्तर, रुचि और भागीदारी के तरीके एक दूसरे से पृथक होते हैं उसी प्रकार प्रत्येक विद्यालय, शिक्षक, अभिभावक, समुदाय और परिवेश की आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों में विभिन्नता पायी जाती है। साथ ही वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में विभिन्न नवचारी कार्यक्रमों के शुरुआत तथा डिजीटल युग के प्रादुर्भाव ने विद्यालयी दायित्वों एवं कार्यों का विस्तार किया है। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि विद्यालय के कुशल संचालन, प्रबंधन, समावेशन एवं सर्वोत्तम शिक्षण रणनीतियों के प्रतिस्थापन के लिए एक नेतृत्वकर्ता को विभिन्न कौशलों से युक्त होना चाहिए । उदाहरणार्थ; विद्यालय प्रबंधन, कक्षा प्रबंधन,कार्य बंटवारा, शिक्षक की कमी, छात्र उपस्थिति की समस्या, विभिन्न क्रिया-कलापों का सफल संचालन, शिक्षक अवकाश, प्रशिक्षण, विद्यालय सारणी,

चेतना सत्र संचालन, परीक्षा / मूल्यांकन, परिणाम प्रकाशन, नामांकन, छात्रवृत्ति, छात्र पंजीकरण आदि कार्यों के सफल संचालन में 21वीं सदी के कौशल अत्यंत सहायक है।

21वीं सदी के प्रमुख कौशल

21वीं सदी के कौशल एवं उनका विस्तार

21वीं सदी के कौशलों को तीन प्रमुख भाग में बांटा गया है अधिगम कौशल, साक्षरता कौशल और जीवन कौशल। इन तीन प्रमुख भाग के कुछ उपभाग है जो निम्नवत है-

1. अधिगम कौशल (LEANING SKILL)–

इसके अंतर्गत चार प्रकार के कौशलों को सम्मिलित है -

(A) विश्लेषणात्मक चिंतन (Critical Thinking)-

विद्यालय प्रमुखों के अंदर किसी भी समस्या या जानकारी के संदर्भ में विश्लेषणात्मक चिंतन की क्षमता होनी चाहिए। उन्हें निष्पक्ष और खुले विचारों वाला, सक्रिय एवं विचारशील होना चाहिए। साथ हो मूल्यों की पहचान और उनके आकलन का कौशल होना चाहिए।

(B) सृजनात्मकता (Creativity)

किसी भी विषय वस्तु को देखने या करने का एक रचनात्मक दृष्टिकोण विद्यालय प्रमुखों के अंदर होना चाहिए। कुछ नया करने की कल्पना या फिर अपने सहयोगियों तथा समुदाय के विचारों पर निर्माण, किसी भी मुद्दे के प्रति अपने दृष्टिकोण में लचीलापन आदि इसके मूल तत्व हैं।

(C) सहयोग (Collaboration)-

स्कूल प्रमुखों में दूसरों के साथ सहयोगपूर्ण तरीके से कार्य संपादित करना एक महत्वपूर्ण कौशल हैं। दूसरों की जरूरतों और दृष्टिकोणों का सम्मान करते हुए विभिन्न प्रकार की चुनौतियों में विद्यार्थियों की मदद करना, अपने सहयोगियों के कार्यों में योगदान देना और उनके कार्य को स्वीकार करना हमें आना चाहिए।

(D) संप्रेषण कौशल (Communication)-

किसी भी कार्य की सफलता की संभावना तब और अधिक बढ़ जाती है जब आप संप्रेषण कौशल में निपुण होते हैं। अपनी राय, इच्छाएं, आवश्यकताएं, आशंकाएँ आदि को मौखिक या लिखित रूप में अभिव्यक्त करने की कला सभी स्कूल प्रमुखों को आनी चाहिए।

2. साक्षरता कौशल (LITERACY SKILLS) -

साक्षरता कौशल के अतंर्गत तीन पक्ष सम्मिलित है-

(A) सूचना साक्षरता (Information Literacy)

इसके अतंर्गत सही सूचना, चित्रों, तथ्यों एवं आकड़ों को समझा जाता है ताकि हमारे अंदर सही जानकारी को पहचानने की क्षमता विकसित हो।

(B) मीडिया साक्षरता (Media Literacy) -

मीडिया साक्षरता हमें देश-दुनिया के खबरों में विश्वसनीय स्त्रोत खोजने में मदद करता है। यह उन तरीकों और पटलों को समझने में मदद करता है जहाँ से सूचनाएं प्रकाशित की जाती है।

(C) प्रौद्योगिकी साक्षरता (Technology Literacy)-

21वीं सदी के कौशल में सबसे अधिक उपयोगी कौशल प्रौधोगिकी साक्षरता है। आज विभीन्न Apps/ Website/ Portal के माध्यम से शैक्षणिक गतिविधियां एवं विभागीय कार्य संपादित किए जा रहे हैं। ऐसे में यह नितांत आवश्यक हो जाता है कि शिक्षण कार्य एवं प्रबंधन में उपयोगी सभी आवश्यक प्रौधोगिकी के ज्ञान से स्कूल प्रमुख स्वयं को अपडेट करें।

3. जीवन कौशल (LIFE SKILLS)

जीवन कौशल के अंतर्गत निम्न कौशल सम्मिलित है-

(A) लचीलापन-

\एक नेतृत्वकर्ता होने के नाते हमारे अंदर अपने प्रत्येक निर्णय पर अडिग रहने की मनोवृति नही होनी चाहिए। नैतिकता और मूल्यो से समझौता किए बिना, नई स्थिति के अनुसार अपने कार्यों और उठाए गए कदमों को आवश्यकतानुसार संशोधित / परिवर्तित करने की कुशलता होनी चाहिए। नये विचारों को जोड़ने का स्वागत करना चाहिए क्योंकि यह जरूरी नहीं है कि हर बार हमारे विचार सबसे सही हो। जब हम गलत हो तो स्वीकारने की क्षमता भी होनी चाहिए

(B) नेतृत्व

एक नेतृत्वकर्ता में अपने लक्ष्य को पूरा करने लिए पूरी टीम को प्रेरित करने की क्षमता होनी चाहिए। स्कूल प्रमुखों में टीम का नेतृत्व और वास्तविक दुनिया की चुनौतियों से निपटने के लिए प्रभावी टीम प्रबंधन की कुशलता विकसित होनी चाहिए।

(C) पहल-

नेतृत्वकर्ता में किसी भी कार्य को स्वंतत्र रूप से प्रारंभ करने की क्षमता आनी चाहिए।

(D) उत्पादकता –

किसी भी कार्य को एक निश्चित समयावधि में पूर्ण करने, सहयोगियों एवं छात्रों को प्रभावी ढंग से काम करने में मदद करना, अपने कार्यों के लिए उत्तरदायी होकर अन्य साथियों के लिए विश्वसनीय बनना, कार्य के उद्देश्य एवं परिमाण का मापन करता आदि इसके अंतर्गत आते हैं।

(E) समाजिक कौशल -

इस कौशल के अतंर्गत स्कूल प्रमुख अपनी क्षमताओं और योग्यताओं का समाज हित में उपयोग करते हैं। विविध सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण में संवाद करने, सहयोगात्मक रूप से और प्रभावी ढंग से काम करने के के कौशल विकसित करना तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों को समझना आदि की कुशलता विकसित होती है।

Case Study

राज्य में पहली बार सिरदला प्रखंड के उत्क्रमित मध्य विद्यालय हेमजाभारत में की गयी पहल

हेमजाभारत विद्यालय में बाल रेडियो स्टेशन की स्थापना

प्रतिनिधि, सिरदला

बच्चों को बेहतर मंच प्रदान करने में सिरदला प्रखंड क्षेत्र के उत्क्रमित मध्य विद्यालय हेमजाभारत अव्वल में गिना जाता हैं. नवादा जिले के सुदूर गांव में स्थित हेमजाभारत बिहार के सरकारी विद्यालयो में अपनी एक अलग पहचान बना रखा है. शिक्षक राजेश कुमार भारती के पहल से यह विद्यालय पुनः चर्चा का विषय बन गया है. विद्यालय में बाल रेडियो स्टेशन का विधिवत उद्घाटन बच्चों द्वारा प्रार्थना के साथ कर दी गयी. गांव, शिक्षक एवं खुद की सहयोग राशि से विद्यालय में ब्रॉडकास्ट सिस्टम लगाया गया है. राजेश कुमार भारती बताते है कि इस सिस्टम के लगने से विद्यालय प्रबंधन और भी मजबूत हो जायेगा.

ब्रॉडकास्ट सिस्टम से बाल रेडियो स्टेशनः अब विद्यालय में बैगलेस डे शनिवार को अंतराक्षरी, ज्ञान विज्ञान कार्यक्रम के तहत चिह्नित बच्चें मनोरंजन एवं ज्ञान की बातें कंट्रोल रूम से करेंगे. जिसका प्रसारण सभी कक्षाओं में की जाएगी. जिसके लिए कोई सभा या अलग व्यवस्था की जरूरत नही होंगी. सभी अपने अपने कक्षाओं से ही इसका लाभ लें सकेंगे.बाल रेडियो स्टेशन के संचालक शिक्षक ललन कुमार होगें.

रेडियो सप्ताह के हर दिन समाचार वाचन किया जायेगा. कविता पाठ, कहानी सुनाना तथा विशेष समाचार में विद्यालय के बच्चों के आवश्यक निर्देश, जरुरी सूचनाए, और आधार, बैंक लिंक, छात्रवृति, फॉर्म भरने, रजिस्ट्रेशन आदि का संदेश भी समाहित होगा. प्रमुख घटनाओं और समाचारों को भी प्रसारित करने की योजना बनायी गयी है.

कार्यक्रम का शुभारंभ के दौरान मौजूद बच्चे .

प्रभात खबर 13-12-2023

अन्य विशेष अवधि में प्रयोग

किसी खास पदाधिकारी या आगंतुक आने पर हर क्लास में संदेश देने की जरूरत नहीं होंगी . ब्रॉडकास्टिंग कार्नर पर जा कर सभी बच्चों को उनके अपने सीट पर बैठे ही संदेश प्राप्त होंगे . भूकंप या कोई सम या विषम प्रस्थिति में अलर्ट करना आसान होगा . छुटियों की घोषणा या आकस्मिक सूचना भी त्वरित सभी क्लास को या समूह क्लास को प्राप्त होगा . राजेश कुमार भारती बताते है कि यह दो तरफा संचार का माध्यम है . इसके जरिए ऑफिस में बैठे– बैठे एक साथ या अलग– अलग क्लास की गतिविधि पर नजर रखी जा सकती है . लिसेन मोड करने पर किसी खास या समूह में क्लास की आवाज सुन सकते है . ऑफिस से ही किसी क्लास के एक बच्चें से बातचीत की जा सकेगी . उसके लिए बच्चे को ऑफिस बुलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी . विद्यालय के प्रधान राजेश रंजन ने इस पहल की काफी सराहना की वहीं सभी शिक्षकों ने खुशी व्यक्त किया है .

आटोमेटिक बेलः यह मशीन दो मोड में काम करेगा जिसका सीधा लाभ विद्यालय को ब्रॉडकास्टिंग के अलावा दूसरा आटोमेटिक घंटी मोड भी है. प्रसारण के अन्य समय यह बेल के रूप में काम करता रहेगा. विद्यालय के समय सारणी आटोमेटिक सिस्टम में होगा. अब किसी व्यक्ति या बच्चों को घंटी लगाने समय देखने की जरूरत नहीं होंगी. बल्कि हर जरूरत के फिट किये गये समय पर घंटी स्वतः बज जायेगी. जिससे शिक्षक को सभी घंटी ससमय देना आसान होगा.स्कूल बेल से बच्चें भी अपने समय को खास ध्यान दे पाएंगे यह काफ़ी आकर्षक भी साबित होगा.

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षक का उत्तरदायित्व बढ़ गया है। शिक्षक की भूमिका छात्रो के अधिगम " के लिए एक व्यापक व्यवस्थापक की होती है। शिक्षक सलाहकार और मार्गदर्शक की भुमिका में काम करते हैं। राज्य बिहार के संदर्भ में कई समस्याएँ है और समाधान में भी विभिन्नता लाजमी है। बाद सूखा गरीबी, बेरोजगारी, जनसंख्या, जागरूकता अभाव, अशिक्षा, अंधविश्वास, लैंगिक भेदभाव, तथा आति भेदभाव जैसे असंख्य समस्याओं के बावजूद सरकारी विद्यालयों में नव प्रयोगों ने आशा की नई राह दीखाई है।

ICT के अच्छे प्रयोग व परिणाम गढ़ने वाले सरकारी विद्यालय अनगीनत है। उनमें से एक विद्यालय नवादा जिले के सिरदला प्रखण्ड के उत्तक्रमित मध्य विद्यालय हेमजाभारत भी है। जहाँ मध्य विद्यालय हेमजामारत में समुदायिक पहल से राज्य में पहली दफ मीडील स्कूल में स्थानीय विद्यायक मो० कामरान के सहयोग से स्मार्ट क्लास की शुरुआत की गयी। बाद में सरकारी प्रयास से सैकडो विद्यालयों को अच्छादित किया गया है।

परन्तु गौर फरमाने की बात यह है कि उस विद्यालय में एक अनोखा प्रयोग "बाल रेडियो स्टेशन " नवाचार को काफी प्रशंसा प्राप्त हुई है। जहाँ प्रतिदिन ICT के उपयोग होने वाली गतिविधि की शुरूआत की गयी है। बच्चों को ICT प्रयोग का बेहतर मंच प्रदान करते हुए बिहार राज्य के सरकारी विद्यालयों में पहला बॉडकास्टींग सिसरम के उपयोग से रेडियो स्टेशन का संचालन विद्यालय परिसर में किया जा रहा है।

विद्यालय में ऑनलाइन साइट से ऑडियो बुक द्वारा कन्ट्रोल रूम से कक्षा वार के साथ- साथ विषयवार Audio Book को प्रसारित कर शिक्षक अभाव को दूर कि जा रहा है।

उपरोक्त रोचक तरीके से शिक्षण कार्य को अधिक प्रभावी बनाया जा रहा है। ऑनलाइन से Audio Book, Youtube से प्रेरक प्रसंग व वर्ग के पाठ्य पुस्तक की कहानियाँ, बैगलेस डे को कन्ट्रोल रूम से कविता पाठ चहक गतिविधी, सामाचार वाचन इत्यादी प्रसारण द्वारा बेहतर तकनीक व संचार का प्रयोग द्वारा शिक्षा को प्रभावी बना रहे है।

सप्ताह के प्रत्येक दिन सामाचार वाचन, कविता पाठ जरूरी सूचनाएँ सम्प्रेषण, छात्रवृति, फार्म भरने, पंजीकरन की सूचना, मेधा सौफट मे इन्ट्री, विभिन्न प्रतियोगिताओं की जानकारी साझेदारी के साथ- साथ बच्चे नशामुक्ति दहेज प्रथा, जनसंख्या आदी प्रमुख समस्याओं पर विचार साझा कार्यक्रम का प्रसारण द्वारा व्यवहार परिवर्तन की दीक्षा दिशा में पहल की जा रही है।

विषम परिस्थितियों में उपयोग - इस बेहतर संचार व प्रौद्योगिकी व्यवहार से अचानक आने वाले समस्या पर नियंत्रण किया जा सकेगा जैसे बाढ़, एकम्प आग-लग्गी, आगजनी जैसे आपात स्थिति में कम समय में संचार माध्यम से विद्यालय को ससमय नियंत्रित किया जा सकेगा।

गतिविधि -1

गतिविधि का नाम – रोल प्ले।

प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों से विद्यालय संचालन एवं प्रबंधन के दौरान आने वाली समस्याओं को चिन्हित करवाया जाना चाहिए। तत्पश्चात इस गतिविधि में विभिन्न भूमिकाओं में रोल निभा कर प्रतिभागी विद्यालय संचालन एवं प्रबंधन की समस्याओं का हल ढूंढ सकते हैं। रोल प्ले गतिविधि के लिए प्रतिभागियों को चार समूहों में बांट कर 21वीं सदी के कौशल से जुड़े एक-एक टॉपिक दिए जाएंगे, जिस पर आवश्यक तैयारी कर वो अपनी प्रस्तुति देंगे।

सुझावात्मक टॉपिक-

1. बच्चों की शिक्षा में अभिभावकों की सहभागिता कैसे सुनिश्चित करेंगे।
2. विद्यालय में आईसीटी के प्रयोग हेतु सहज व सकारात्मक वातावरण का निर्माण कैसे करेंगे।
3. 21 वीं सदी के कौशल का प्रयोग करते हुए पाठ - प्रस्तुति।
4. विद्यालय में सांस्कृतिक विकास हेतु सहकर्मियों के साथ मिलकर योजना तैयार करना।

नोट - उपरोक्त टॉपिक सुझावात्मक है। टॉपिक का चयन प्रशिक्षक अपने जिले की आवश्यकताओं को देखते हुए भी कर सकते हैं।

गतिविधि -2

इस गतिविधि के अंतर्गत वैसे नजदीकी विद्यालय का अवलोकन/परिभ्रमण कर सकते हैं जो बेहतर कार्य कर रहे हैं और उनका प्रबंधन अनुकरण योग्य हो। परिभ्रमण के दौरान कुछ प्रमुख बिंदुओं को नोट किया जाना चाहिए जिससे हमें यह अध्ययन करने में सहायता मिले कि आखिर वो कौन-कौन सी विशेषताएं/कार्य है जो हमारे विद्यालय से अवलोकन/परिभ्रमण करने वाले विद्यालय को अलग दर्शाती है।

अवलोकन/ परिभ्रमण के दौरान नोट करने योग्य कुछ सुझावात्मक बिंदू निम्नलिखित है -

- **अवलोकन किए गये विद्यालय / संस्था का नाम व पता।**
- **संस्था के तरफ से समन्वय कर रहे शिक्षक का नाम।**
- **विद्यालय में बेहतरीन नेतृत्व उदाहरण।**
- **सृजन क्षमता का उपयोग किए जाने वाले पहलों की सूची।**
- **प्रौद्यौगिकी साक्षरता के साधन व उपायों की चर्चा।**
- **सूचना कौशल के बेहतर प्रयोग के उदाहरणों की समीक्षा।**
- **प्रबन्धकीय घटकों की मुख्य श्रेणियां।**

नोट- आप अपने अवलोकन के आधार पर महत्वपूर्ण बिंदुओं की सूची तैयार कर सकते हैं।.

केस स्टडी - 01

नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत व्यावसायिक शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है।इस उद्देश्य की संप्राप्ति में 21वीं सदी के कौशल अंतर्गत निहित कौशलों के माध्यम से लक्षित परिणाम की प्राप्ति की निश्चितता बढ़ जाती है। इस क्रम में 21वीं सदी के प्रमुख कौशलों में से एक जीवन कौशल में निहित कौशल 'पहल' का उपयोग करते हुए बिहार के कैमूर जिले के मध्य विद्यालय डहरक के प्रधानाध्यापक हरिदास शर्मा द्वारा स्वतंत्र रूप से पहल करते हुए अपने विद्यालय में 'मोमबत्ती निर्माण कार्यशाला' का शुभारंभ किया गया, जिसके अंतर्गत बच्चों को मोमबत्ती निर्माण का प्रशिक्षण स्वयं प्रधानाध्यापक द्वारा देकर उन्हें दक्ष बनाया जा रहा है।

मोमबत्ती निर्माण की पूरी प्रक्रिया, उपयोग की जानेवाली सामग्री एवं इसकी उपयोगिता तथा महत्व को बताकर व्यावसायिक कौशल निर्माण का कार्य विद्यालय में शुरू किया। यह विद्यालय विगत कई वर्षों से अपने यहाँ ऐसे कार्यक्रम आयोजित कर रहे है जो बच्चों के जीवन कौशल को समृद्ध करने में सहायक सिद्ध हो रहे है।

केस स्टडी - 02

बच्चों की उत्तम शैक्षणिक गुणवत्ता के लिए प्रारंभिक स्तर का राज्य के कुछ चुनिंदा आदर्श विद्यालयों में शुमार, बेगूसराय के बरौनी प्रखंड अंतर्गत राजकीयकृत मध्य विद्यालय बीहट के प्रधानाध्यापक रंजन कुमार बताते हैं कि विद्यालय में योगदान के समय बच्चों की शैक्षणिक समस्या से जुड़ी एक बड़ी चुनौती सामने थी ये कि बच्चे भाषा शिक्षण के विविध सोपानों से गुजरने के क्रम में अधिगम की आवधारणात्मक पहचान करने की जगह चीजों को समझने से अधिक रट रहे थे। उनके अंदर विश्लेषणात्मक चिंतन/क्रिटिकल थिंकिंग की कल्पना भी बेमानी प्रतीत हो रही थी । ऐसी ही स्थितियों के बीच 21 वीं सदी के की शैक्षिक संकल्पनाओं को मूर्त रूप देने के लिए विद्यालय स्तर पर प्रधानाध्यापक की नियमित पहल से डिजिटली ई-मैगजीन 'कलरव लर्निंग-जर्नल' विगत वर्ष 2022 से नियमित तौर पर प्रकाशित हो रहा है।

कलरव लर्निंग जर्नल, राजकीयकृत मध्य विद्यालय बीहट से प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिका है। इसका प्रकाशन पीडीएफ प्रारूप में ज्यादा से ज्यादा बच्चों, अध्यापकों, अभिभावकों और स्कूली शिक्षा से जुड़े अधिकाधिक हित धारकों तक निःशुल्क रूप से डिजिटली प्रसारित करने के लिए किया जाता है। इस ई पत्रिका के माध्यम से विद्यालय के बच्चों व अध्यापकों सहित पूरे बिहार और देश भर से बाल केंद्रित सृजनशीलता, क्रियेटिव तथा क्रिटिकल थिंकिंग को प्रोत्साहित करनेवाली और शैक्षिक नवाचार के अभिनव प्रयोगों से संबंधित रचनाओं का प्रकाशन किया जाता है।

इस पत्रिका प्रकाशन प्रारंभ होने के छह महीने के भीतर बच्चों की भाषाई अभिक्षमता के आत्मविश्वासपूर्ण प्रकटीकरण में अद्वितीय वृद्धि दर्ज की गई। ये केस स्टडी 21वीं सदी के अनुकूल भाषायी कौशल उन्नयन के महत्व को दर्शाने के साथ साथ प्रौद्योगिकी के समुचित उपयोग का बेहतरीन उदाहरण है।

केस स्टडी - 03

नई शिक्षा नीति 2020 और एफएलएन प्रोजेक्ट के अंतर्गत भी बच्चों की शिक्षा में अभिभावकों की सहभागिता सुनिश्चित करवाने पर जोर दिया गया है। आज भी अधिकांश अभिभावकों को इस संबंध में शिक्षित/प्रेरित करने की आवश्यकता है कि बच्चों की शिक्षा में उनकी भागीदारी कितनी महत्वपूर्ण है। अभिभावकों में जागृति विकसित करने के उद्देश्य से बच्चों को कहानी सुनाने तथा बच्चों से बात करने के संबंध में बिहार के सीतामढ़ी जिले के अंतर्गत मध्य विद्यालय मलहाटोल में 'निपुण अभिभावक निपुण बच्चे' नामक एक पहल की शुरुआत विद्यालय की शिक्षिका प्रियंका कुमारी द्वारा की गई। इस पहल में अभिभावकों को विद्यालय में आमंत्रित कर उन्हें अपनी मातृभाषा में कहानी सुनाने के लिए अनुरोध किया जाता है।जो कहानी नही सुना पाते वैसे अभिभावकों से बच्चों के बीच प्रेरक बातों का प्रसार करवाया जाता है ताकि बच्चों में स्वच्छ आदतें विकसित हो सके। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान अभिभावक बच्चों की शिक्षण प्रक्रिया में खुद को जोड़ कर देख पाते हैं। साथ ही अभिभावकों को इसी प्रकार घर पर भी बच्चों की शिक्षा में सहभागी बनने के लिए प्रेरित किया जाता है। फलस्वरूप बहुत से अभिभावकों की मानसिकता में परिवर्तन आया जिन्हें लगता था कि उनकी असाक्षरता/कम पढ़ा-लिखा होना बच्चों की शिक्षा में सहभागी बनने की राह में रुकावट है। गौरतलब है कि इस विद्यालय में पढ़ने वाले सभी बच्चे सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक रूप से अभिवंचित समूह से संबंध रखते है और ऐसे में अभिभावकों को कक्षा-कक्ष तक लाकर कहानी सुनवाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था।

उपरोक्त केस स्टडी 21वीं सदी के प्रमुख कौशलों में निहित कौशल यथा संप्रेषण कौशल, सामाजिक कौशल, सृजनात्मकता और पहल का सम्मिश्रित उदाहरण है।

MCQs

- **निम्नलिखित में से कौशल का संबंध किससे है -**

    1. कंप्यूटर ज्ञान से
    2. दक्षता एवं तकनीक के ज्ञान से
    3. शिक्षण कौशल से

- **कौशल को मुख्यतः कितने भागों में बांटा जा सकता है?**

    1. पांच
    2. छह
    3. तीन

- **इनमें से 21वीं सदी के प्रमुख कौशल कौन हैं?**

    1. अधिगम कौशल, साक्षरता कौशल और जीवन कौशल।
    2. शिक्षण कौशल, तकनीकी कौशल, लेखन कौशल।
    3. कंप्यूटर संचालन कौशल, प्रबंधन कौशल, मार्केटिंग कौशल।

- **विश्लेषणात्मक चिंतन का कौशल किस कौशल का उपभाग है?**

    1. साक्षरता कौशल
    2. अधिगम कौशल
    3. जीवन कौशल

- **विद्यालय प्रमुखों के लिए विद्यालय संचालन एवं प्रबंधन में 21वीं सदी के प्रमुख कौशलों का ज्ञान कितना उपयोगी है?**

    1. बहुत उपयोगी है।
    2. उपयोगी नही है।
    3. कुछ कहा नहीं जा सकता।

- **जीवन कौशल के अंतर्गत निहित कौशल 'पहल' से क्या तात्पर्य है?**

    1. कार्यों का सभी के बीच बंटवारा करना।
    2. समूह को महत्व देना।
    3. किसी भी कार्य को स्वतंत्र रूप से प्रारंभ करने की क्षमता।